आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2453 • उदयपुर, शनिवार 11 सितम्बर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

चलने को आतुर लिंकन रानी

जब खुशियां द्वार पर दस्तक देती दिखाई दें और एकाएक वे काफूर होने लगे तो व्यक्ति अथवा परिवार पर क्या बीतेगी, उसकी कल्पना से ही मन सिहर उठता है। ओडिशा के ब्रह्मपुरगंजाम निवासी कानूस्वाय के परिवार के साथ ऐसा ही कुछ हुआ कि खुशियां आती दिखाई दी और जब वे आ गई तो गहरे तक पीड़ा दे गई। कानूस्वाय की पत्नी ने वर्ष 2018 में कस्बे के सरकारी अस्पताल में अपनी पहली संतान को जन्म दिया। माता–पिता और परिवार आने वाले बच्चे के लालन–पालन को लेकर छोटे–छोटे लेकिन रंगीन सपने सजा रहे थे। बच्ची के जन्म की खुशी तो मिली लेकिन अगले ही पल वह खुशी बिखर गई। जन्म लेने वाली बच्ची के दोनों पांव पेट से सटे थे। माता–पिता इस स्थिति में शोक और संशय में डूब गए। डॉक्टरों ने किसी तरह उन्हें दिलासा दिया कि बच्ची के पांव को वे सीधा करने की पूरी कोशिश करेंगे, हालांकि इसमें थोड़ा वक्त लगेगा।

बच्ची को माता–पिता ने लिंकन रानी नाम दिया। इस तरह 8–9 महीने बीत गए। डॉक्टरों ने पांव तो लम्बे–सीधे कर दिए, लेकिन बच्ची अभी ठीक से खड़ी नहीं हो पा रही थी। इसका कारण दोनों पांव के पंजों का आमने–सामने मुड़ा हुआ होना था। कुछ अस्पतालों में दिखाया भी पर कहीं भी संतोषजनक जवाब नहीं मिला।

किसी बड़े अस्पताल का रुख करना उनकी गरीबी के चलते नामुमकिन था। वह दिन–रात मजदूरी कर जैसे–तैसे परिवार का पोषण कर रहा था। करीब 7–8 माह पूर्व उन्हीं के गांव का एक दिव्यांग नारायण सेवा संस्थान, उदयपूर में पांव का ऑपरेशन करवाकर आराम से चलता हुआ जब घर लौटा तो उसे देख कानू को भी अपनी बिटिया के लिए उम्मीद की एक किरण दिखाई दी। अप्रेल 2021 में माता–पिता लिंकन को लेकर संस्थान में आए, जहां उसके दांए पंजे का सफल ऑपरेशन हुआ और इस वर्ष 10 अगस्त को वह दूसरे पंजे और घुटने के ऑपरेशन के लिए आए, 14 अगस्त को यह ऑपरेशन सफल रहा। पहले वाले पंजे के ठीक होने से माता–पिता को बाएं पांव के भी पूरी तरह ठीक होने की उम्मीद है तो लिंकन अन्य बच्चों की तरह चलने–दौड़ने को मचल रही है।

श्रमिकों व कामकाजी महिलाओं को छाते भेंट

वर्षा का दौर पुनः प्रारंभ होने के साथ ही नारायण सेवा संस्थान ने दिव्यांगों, कामकाजी महिलाओं और श्रमिकों को छाता वितरण कार्यक्रम भी गत बुधवार से पुनः प्रारम्भ किया। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि निदेशक वन्दना जी अग्रवाल के निर्देशन में संस्थान के मानव मंदिर परिसर और हिरण मगरी सेक्टर–4 में छातों का वितरण हुआ।

छाता वितरण का यह क्रम शहर व उसके आसपास के इलाकों में जून के अन्तिम सप्ताह में आरम्भ किया गया था।

खुर्जा (उत्तरप्रदेश) में कृत्रिम अंग वितरण शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा में लिये जानी जा रही है।

देश–विदेश में समय–समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण, दिव्यांग सहायक उपकरण एवं दिव्यांग ऑपरेशन जारी है।

ऐसा ही कृत्रिम अंग वितरण शिविर 12 अगस्त 2021 को नारायण सेवा संस्थान के खुर्जा, जिला– बुलंदशहर, उत्तरप्रदेश आश्रम में संपन्न हुआ।

इस शिविर में 19 दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग तथा 07 के लिये कैलिपर्स की सेवा सराहनीय हुई। उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री हरपाल सिंह जी (पूर्व विधायक खुर्जा), अध्यक्षता श्री सत्यवीर शास्त्री जी (पूर्व प्रधान महोदय, खुर्जा), विशिष्ट अतिथि श्रीमान जयप्रकाश जी चौहान, श्रीमान राजप्रताप सिंह जी (समाज सेवी), श्रीमान योगेन्द्र प्रताप जी राघव (सेवा प्रेरक एवं संयोजक) कृपा करके पधारे और संस्थान की सेवा प्रकल्पों की सराहना की।

टेक्नीशयन टीम में श्री नाथूसिंह जी, शिविर टीम में श्री हरिप्रसाद जी (शिविर प्रभारी), श्री भरत जी भट्ट का पूर्ण योगदान रहा।

कैथल (हरियाणा) में राशन वितरण

नारायण सेवा संस्थान ने कोरोना से प्रभावित परिवारों तथा जरूरतमंदों को लॉकडाउन व अनलॉक काल में राशन वितरण की सेवा प्रारंभ की है। देशभर के 50000 परिवारों को इसका लाभ दिया जा रहा है।

इस शृंखला में संस्थान की कैथल शाखा द्वारा 26 जुलाई को राशन वितरण शिविर लगाकर 38 परिवारों को राशन किट प्रदान किये। प्रत्येक किट में आटा, दाल, चावल, घी, तेल नमक लाल मिर्चि पाउडर, धनिया, शक्कर आदि सामग्री समाहित है।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान विकास जी शर्मा, अध्यक्ष श्रीमान सतपाल जी गुप्ता, विशिष्ट अतिथि श्री रामकरण जी, श्री मदनलाल जी मित्तल, श्री सतपाल जी मंगला शाखा संयोजक, श्री दुर्गाप्रसाद जी, श्री सोनू जी बंसल, श्री जितेन्द्र जी बंसल।

शिविर टीम लालसिंह जी भाटी (शिविर प्रभारी), रामसिंह जी सहायक।

नारायण संस्थान की सेवा के आयाम
प्रकाश के सपनों को मिले पंख

नाम प्रकाश था किन्तु जीवन उसे अंधकार में दिख रहा था। वह खूब पढ़कर परिवार और गांव के लिए कुछ करना चाहता था। लेकिन आर्थिक समस्या उसके इस सपने को पूरा करने में बाधक थी। ऐसे में नारायण सेवा संस्थान उसका मददगार बना और आगे की पढ़ाई का रास्ता खोलकर उसके सपनों को पंख लगा दिए। राजस्थान के उदयपुर जिले के आदिवासी क्षेत्र कोटड़ा निवासी प्रकाश बम्बुरिया ने बचपन में ही माता–पिता को खो दिया था। दादा–दादी उसकी परवरिश तो करते रहे लेकिन गरीबी और वृद्धावस्था के कारण वे न तो अपनी और न ही बच्चे की देखभाल ठीक से कर पा रहे थे। इसी दौरान संस्थान का कोटड़ा में सेवा शिविर था।

जिसमें ट्रस्ट के शिविरकर्मियों द्वारा बच्चे की हालत देखकर उसे संस्थान में लाने का निर्णय लिया गया। उसे नारायण चिल्ड्रन एकेडमी में भर्ती किया गया। पांच वर्ष की उम्र से प्रकाश ने संस्थान में रहते हुए अपनी ग्यारहवीं तक की पढ़ाई पूरी की। इस होनहार ने 10वीं बोर्ड की परीक्षा 73 प्रतिशत अंक से उत्तीर्ण की है।

प्रकाश की काबिलियत को देखते हुए संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बारहवीं में अच्छे अंक हासिल करने के उद्देश्य से उसे एक जाने–माने कोचिंग सेंटर से कोचिंग का निर्णय लिया।

जिसके लिए 6500 रुपये शिक्षण शुल्क के रूप में प्रदान किए गए ताकि वह अपनी मेहनत और योग्यता के बल पर बड़ी उपलब्धियां हासिल कर जीवन को अपने नाम के अनुरूप सार्थक कर सके।

प्रसन्नता प्रेम का झरना : कैलाश मानव

छोटा सा समझाइश के लिये। तो मैं आपको ये कह रहा था, चौबीसों घण्टे दुनिया का काम करेंगे। सोऐंगे, भोजन भी करेंगे परन्तु ध्यान में देखेंगे कि, कहाँ हमारी संवेदना देखते – देखते राग नहीं हो जाए, चिपकाव नहीं आ जावे। ये मुझे मिलना ही चाहिये। ये मेरे को होना ही चाहिये। अब मेरी गाड़ी पुरानी हो गई, नई गाड़ी लेनी ही चाहिये। गाड़ी ले ली तो ऐरोप्लेन लेना भी चाहिये। नहीं होना चाहिये, चिपकाव। ये चिपकाव को राग कहते हैं। इस चिपकाव को लालच कहना चाहिये, लालसा कहते हैं, कामनाएं कहते हैं।

अनन्त कामनाएं और इन कामनाओं ने मेरे को विकारोंयुक्त कर दिया। और कामनाएं इतनी बढ़ गई की मेरी व्याकुलता बढ़ गई। हाँ गीताजी में तो यही कहते हैं। ऐसा काम मत करो जिससे तुम स्वयं व्याकुल हो और दूसरो को व्याकुल भी मत करो। व्याकुल नहीं करना है। होसपेट में 250 से अधिक ऑपरेशन हुए।

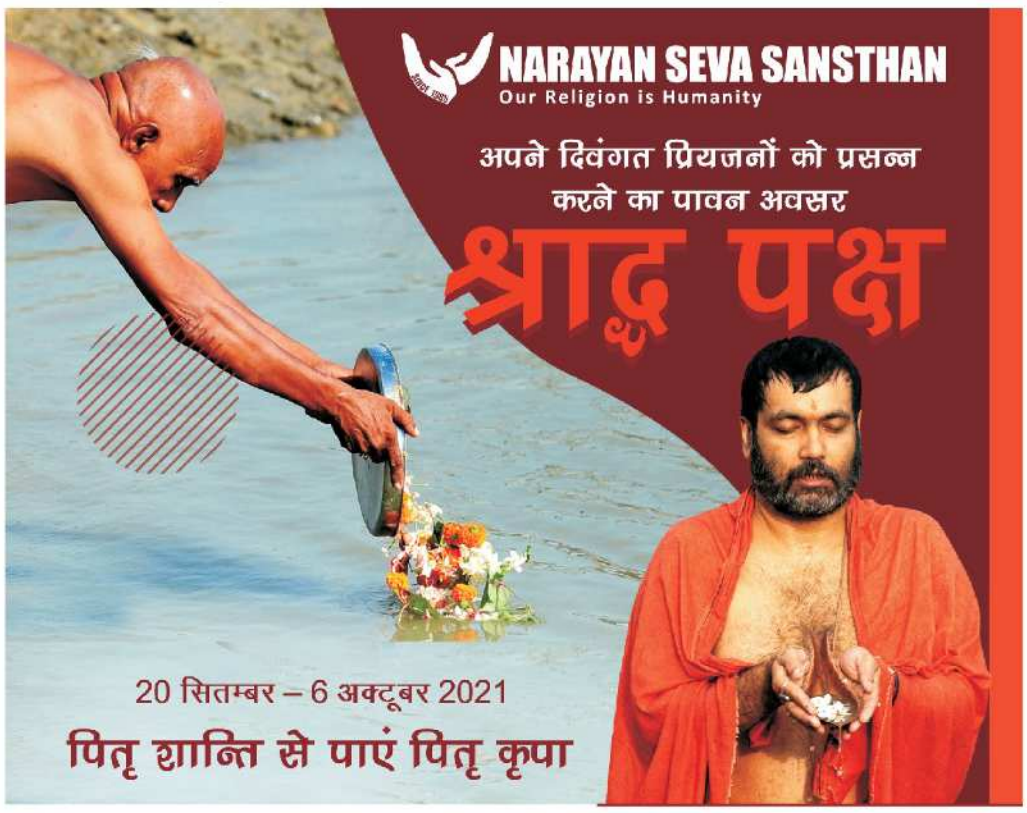

श्राद्ध तिथि ब्राह्मण भोजन सेवा ₹5100

श्राद्ध तिथि तर्पण व ब्राह्मण भोजन सेवा ₹11000

सप्तदिवसीय भागवत मूलपाठ, श्राद्ध तिथि तर्पण व ब्राह्मण भोजन सेवा ₹21000

Bank Name: State Bank of India
Account Name: Narayan Seva Sansthan
Account Number : 31505501196
IFSC Code : SBIN0011406
Branch: Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001

Paytm

UPI
yono SBI SBI Payments
UPI Address for Indian donors which is narayanseva@SBI

Head Office: 483, Sevadham, Sevanagar, Hiran Magari, Sector-4, Udaipur(Raj.) 313002, INDIA
+91 294 662 2222 | +91 7023509999
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

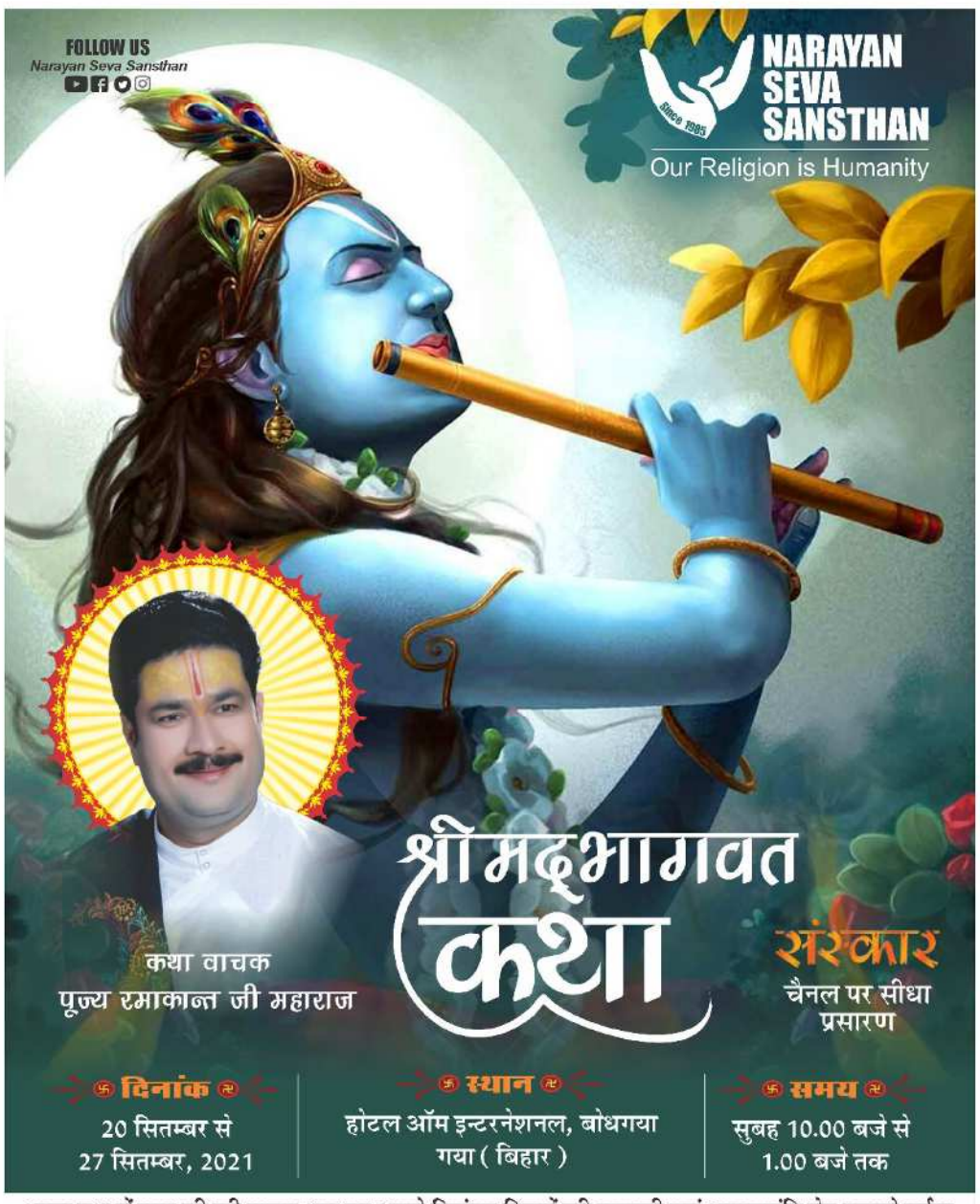

श्राद्ध पक्ष में गया जी की पावन धरा पर अपने दिवंगत पितरों की सदगती एवं आत्मशांति हेतु करायें तर्पण

Head Office: Hiran Magari, Sector-4, Udaipur(Raj.) 313002, INDIA | www.narayanseva.org
+91 294 662 2222 | +91 7023509999 | info@narayanseva.org

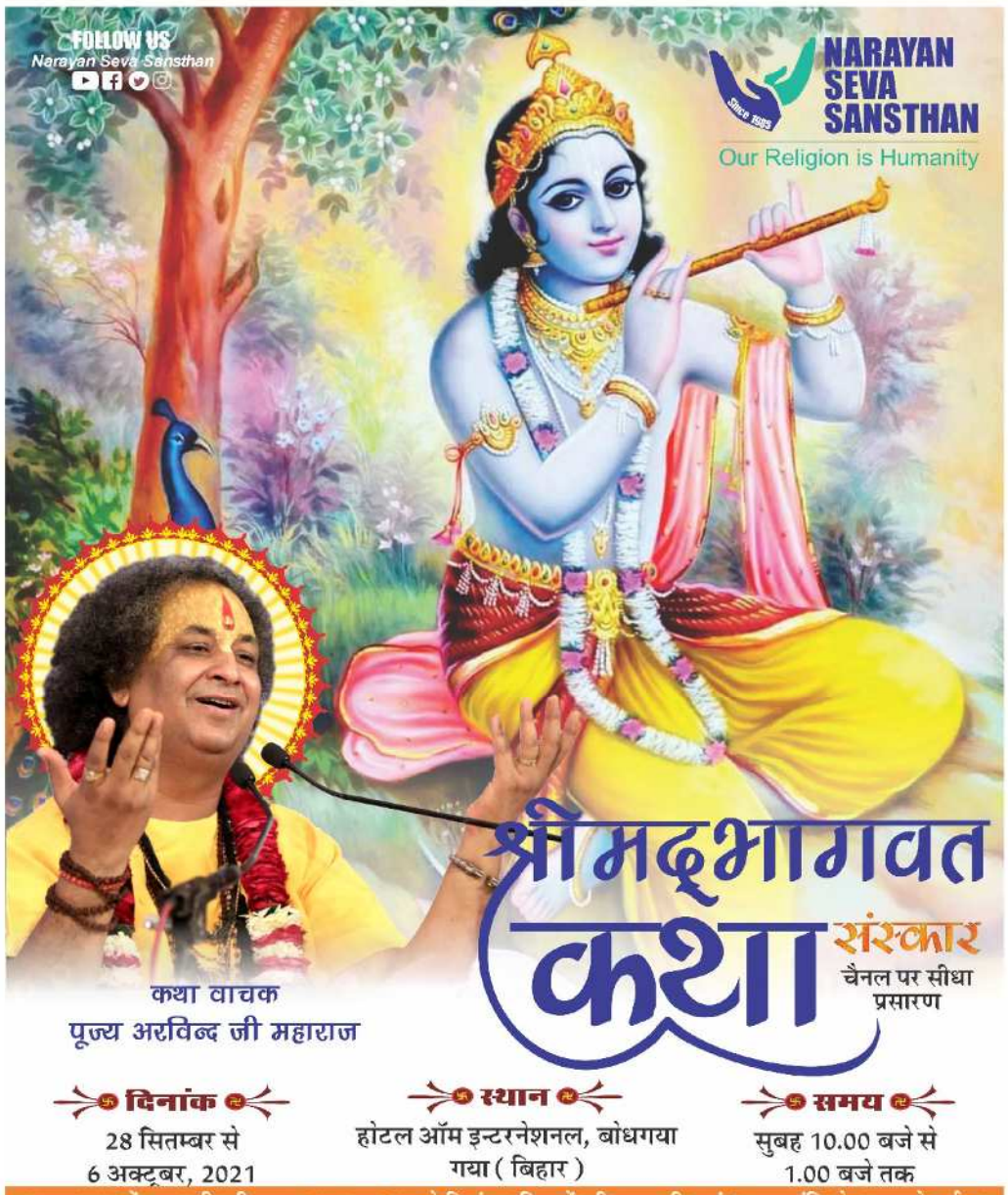

श्राद्ध पक्ष में गया जी की पावन धरा पर अपने दिवंगत पितरों की सदगती एवं आत्मशांति हेतु करायें तर्पण

Head Office: Hiran Magari, Sector-4, Udaipur(Raj.) 313002, INDIA | www.narayanseva.org
+91 294 662 2222 | +91 7023509999 | info@narayanseva.org

सम्पादकीय

इन दिनों सामाजिक रीति–रिवाजों में एक स्पर्द्धा सी मची है। रीति–रिवाज चाहे मांगलिक हो या शोक के हरेक व्यक्ति कुछ हटकर करके सभी का ध्यान आकृष्ट करने को आतुर है। आज वैवाहिक आयोजनों को देखें तो उनकी चकाचौंध देखकर आँखें चौंधिया जाती है। अनाप–शनाप व्यय की धारा बहती प्रतीत होती है। अपनी क्षमता से काफी बढ़ चढ़ कर दिखावा करने की प्रवृत्ति यत्र–तत्र दिखाई देती है। ऐसा क्यों ? जरा मनन करें। व्यक्ति को प्रशंसा की भूख और लोकलाज के भय ने इस अंधी दौड़ में धकेल दिया है। प्रशंसा के लोभ में वह इतना जोश में आ जाता है कि वह होश तक भूल जाता है। वह अपनी सारी क्षमताओं का उल्लंघन करते हुए कर्जे से भी भव्य आयोजनों द्वारा स्वयं को प्रतिष्ठित करना चाहता है। क्या ऐसी प्रतिष्ठा उसे कुछ हासिल करा पायेगी ? अपनी चादर से ज्यादा पाँव पसारने पर जब उसे ठिठुरन सतायेगी तो जो आज प्रशंसक हैं वे ही निन्दक बन कर उभरेंगे। लोगों को तो दूसरों की मूर्खता का मजा लेना होता है। हमें सादगीपूर्ण ढंग से विविध समारोहों को सम्पन्न करना चाहिये ताकि आर्थिक संतुलन नहीं बिगड़े व मन में कोई भार भी न हो। हम कितना भी कुछ कर लें, वह अंतिम ऊँचाई नहीं है। तो फिर होड़ क्यों ? ऐसे ही आजकल गमी के प्रसंगों में भी हार्दिक संवेदना की जगह प्रदर्शन प्रमुख हो गया है। कभी–कभी तो ये प्रदर्शन भौंडे भी लगने लगते हैं। हमें ठहरकर सोचना होगा कि आखिर हम करना क्या चाहते हैं ? क्यों करना चाहते हैं ? सामूहिक विवाह भी इसका एक तोड़ है।

कुछ काव्यमय

जो गरिमा में जीना सीखा,
वही सभी का प्यारा होगा।
मानवता सूत्रों से सज्जित,
अद्भुत एक नजारा होगा।
दीन दुःखी की पीड़ा जानी,
वही तो एक सहारा होगा।
मैं और तुम मिलकर कुछ कर लें,
वह सद्कर्म हमारा होगा।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

विकार मुक्ति

तेरा मेरा जग का मंगल होय रे। हाँ, महाराज, मंगलाचरण किया। ऐसा कोई कार्य हमारे से न हो जिसमें अन्य का अहित होता हो। ऐसी हरि की कथा, श्रीमद्भागवत महापुराण का अमृतम् की वर्षा। श्रीरामचरित मानस हुलसी के बेटे तुलसीदास जी महाराज के द्वारा रचित रामचरितमानस एवं राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी चिरगाँव झांसी वाले, अग्रसेनजी महाराज के वंशज उनके सांकेत में पिछले दिनों में अपण स्वयं का स्वाध्याय। कहते हैं– स्वाध्याय क्या है? स्व का अध्ययनम् कैसे आये थे? हमें परमात्मा ने क्यों सहस्रार चक्र दिया है? क्यों हमारे को अनाहत चक्र का हृदय दिया है? ये 36 बार धड़कने वाला हृदय, इसका हम सदुपयोग करें। ये तो परमात्मा ने बना दिया। धर्म कभी भी कौतुहल का विषय नहीं होता है– बन्धुओं।

मैं आपको, माताओं, बहनों, धर्मपरायण बन्धुओं को नमन् करूं। ये व्यवहार की कथा, ये प्रातःकाल उठकर के रात्रि को निद्रा देवी की गोद में जाने तक कैसा हमारा प्रेम, स्नेह–भाव और वात्सल्य का भाव रहे? मुझ में भी कैसी सेवा भावना रहे? हाँ, कई कहानियों और दोहों के माध्यम से और रामचरितमानस और साकेत की कृपा से। कोई विकार नहीं, विकार क्या होता है? हमें तो इतनी ऊँची हिन्दी नहीं आती। ये क्रोध आना, लालच बहुत बढ़ जाना, ये आलस्य बहुत आ जाना। ये पापों का दलदल है। ये विकारों का समूह है उसको मिलाकर विकार बोलते है। विकार रहित पार ब्रह्म परमात्मा, मर्यादा पुरूषोत्तम विकार रहित। ये तुलसी जी का पौधा, विकार रहित। इतना छोटा सा पौधा, और इसमें फूल आ रहे हैं, तुलसी माताजी के। अक्षत, हाँ सर्वाभावे अक्षत

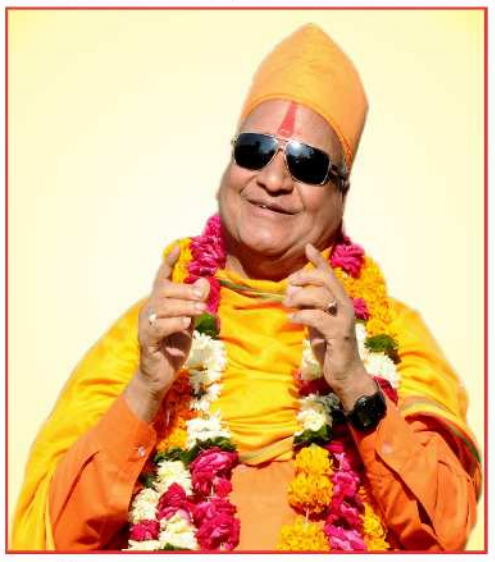

समर्पयामी की कथा।

ओ महिमा प्रेमदेव महाराज।
करे सब हृदय हृदय में राज।

प्रेमदेव महाराज भगवान राम, मर्यादा पुरुषोत्तम की कथा। रात्रि तक तय हुआ था, प्रातःकाल शुभ मूहूर्त में राम भगवान का राजतिलक होगा। रातों रात मंदमति मंथरा। ऐसे मंदमति मंथरा कोई बनना मत– भैया। आपके पास में सगे– सम्बन्धी हो तो सावधान रहना।

एक बहन ने परसों फोन किया– बाबूजी मुझे कैन्सर हो गया था। किमोथेरेपी ली मैंने, ट्रिटमेंट किया। मेरा केन्सर दूर भी होने लग गया। लेकिन परसों ही मेरी जेठानी ने फोन किया– अरे ! तेरे तो बाल उड़ गये। तेरे बाल, अच्छे नहीं लगते। तेरे बाल वापस काले–काले आ जायेंगे तब मैं तेरे से मिलने आऊंगी। बाबूजी मेरी तो रात की नींद उड़ गयी। अरे ! ऐसी जेठानी? केवल बालों के प्रति प्रेम था– क्या? प्रेम तो आत्मा से होता है। प्रेम शरीर से नहीं होता। ये बाल जब शरीर से अलग हो जाते हैं। यदि मुँह में आ जावे, सब्जी में तो थू–थू करने लग जाते हैं। कहते है– अरे ! ये बाल और नाखून कैसे आ गया? ये दांत की हड्डी का टुकड़ा कैसे आ गया ? हमारे देह देवालय में सब सम्पुष्ट है। केवल देह देवालय का, एक बटा सोलहवां हिस्सा स्कीन का ये। ये पूरे–पूरे देह देवालय पे शरीर का सबसे बड़ा अंग स्कीन।

आरती देह देवालय की।
पावन पंचतत्वमय की।
आरती.....।
कैकेयी का मन, महका चंदन
नहीं था। भगवान श्रीराम
जब तक जाय प्रणाम किया।
माँ ने आशीर्वाद दिया।
हंस सीता कुछ सकुचाई।
आँखें तिरछी हो आई।
लज्जा ने घूंघट काढ़ा।
मुख का रंग किया गाढ़ा।

महाराज यहाँ रुक गये। लज्जा रूपी घूंघट निकाला। कितनी अद्भुत बात है?

– कैलाश 'मानव'

कार्य के प्रति निष्ठा

टोडरमल एक प्रसिद्ध साहित्यकार थे। उत्कृष्ट लेखन के धनी इन साहित्यकार में अपने काम के प्रति अद्भुत लगन थी। वे जिस भी विषय पर लिखना तय कर लेते थे, उसे एक बार हाथ में लेने पर पूरा करके ही छोड़ते थे। एक समय वे अपने ग्रंथ 'मोक्षमार्ग' पर काम कर रहे थे। यह विख्यात ग्रंथ है और आज भी बहुसंख्यक लोगों के लिए मार्गदर्शक बना हुआ है।

जब टोडरमल के मस्तिष्क में मोक्षमार्ग लिखने का विचार आया तो उसके लिए उन्होंने अनेक लोगों से सामग्री जुटानी आरम्भ की। टोडरमल अपने काम में इतने डूब गए कि उन्हें रात और दिन का भान ही नहीं रहा और न खाने–पीने की सुध रही। घर के लोग उनका ध्यान रखते और वे अपना ग्रंथ लिखते रहते।

एक दिन टोडरमल अपनी माँ से बोले, "माँ ! आज सब्जी में नमक नहीं है। लगता है आप नमक डालना भूल गईं।" उनकी बात सुनकर माँ मुसकराते हुए बोली, "बेटा ! लगता है आज तुमने अपना ग्रंथ पूरा कर लिया है ?" माँ की बात सुनकर टोडरमल चौंके और हैरानी से बोले, "हाँ माँ, मैंने अपना ग्रंथ पूरा कर लिया है, लेकिन आपको कैसे पता चला?"

माँ ने जवाब दिया, "बेटा ! नमक तो मैं तुम्हारे भोजन में पिछले छः महीने से नहीं डाल रही थी, किन्तु उसका अभाव तुम्हें आज पहली बार महसूस हुआ है। इसी से मैंने जाना। जब तक तुम्हारे मस्तिष्क में पुस्तक की विषय –सामग्री थी, तब तक नमक जैसी वस्तुओं के लिए स्थान नहीं था। अब जब वह जगह खाली हो गई, तो इन्द्रियों के रसों ने उसे भरना शुरू कर दिया।"

दरअसल, कार्य के प्रति लगन और निष्ठा हो तो कार्य उत्कृष्टता के साथ पूरा होता है। इसलिए जब भी कोई कार्य हाथ में लें तो उसे पूरी लगन के साथ करें।

सफलता ट्रेन की तरह होती है। इसमें कड़ी मेहनत, ध्यान केन्द्रित करने, भाग्य व दूरदर्शिता के कई डिब्बे होते हैं, और इन डिब्बों को आत्मविश्वास का इंजन खींचता है।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

कपड़ों के साथ साथ अब उसने बिना अवधि पार दवाइयां भी एकत्र करना शुरु कर दिया। हर घर में ऐसी दवाइयां मिल ही जाती हैं। अवधि पार होने के बाद तो उन्हें फेंकना ही पड़ता है मगर उसके पहले घर में बेकार पड़ी ऐसी दवाइयां किसी के काम आ जाये तो इससे बढ़िया बात और क्या हो सकती है। सरकारी कर्मचारियों के घरों से इस तरह की दवाइयां खूब एकत्र होने लगी। पुनर्भरण की व्यवस्था होने के कारण कर्मचारियों के घर में दवाएं रहती ही हैं। इस तरह की दवाएं भी जब भारी मात्रा में एकत्र होने लगी तो इन्हें रखने की समस्या हो गई।

सेटेलाईट अस्पताल पास ही था। अब तक कैलाश की भी क्षेत्र में और अस्पताल में पहचान बन गई थी। उसने मित्रों की मदद से एक अलमारी खरीदी और अस्पताल के डाक्टरों से अनुमति लेकर वह अलमारी सेटेलाईट अस्पताल में ही रखवा दी। अलमारी में सभी प्रकार की एकत्र हुई दवाएं रख दीं। अलमारी की एक चाबी अस्पताल में रख दी तथा एक चाबी कैलाश ने अपने पास रख ली। अस्पताल के डॉक्टरों को खुली छूट दे दी कि किसी भी जरूरतमंद रोगी को दवा की आवश्यकता हो तो अलमारी से निकाल कर दे दे। यह सिलसिला चल गया। कैलाश अपने साथियों के साथ दवाएं एकत्र कर लाते रहे और डॉक्टर गरीब रोगियों के लिये उनका उपयोग करते रहे।

अंश - 108

धनिए की पंजीरी खाने से नहीं बढ़ेंगे शरीर के दोष

आयुर्वेद के अनुसार मधुर रस वाला सूखा धनिया पित्त नाशक है। मानसून के दिनों में जठराग्नि धीमी हो जाती है। जिससे अपच, कब्ज, दस्त या पाचन संबंधी दिक्कतें होती है।

ऐसे में धनिए से तैयार पंजीरी गुणकारी है। इसमें मौजूद तत्व पित्त को बढ़ने से रोकते है, जिससे मौसमी रोगों भी आशंका भी कम होती है। इस मौसम में जब घी में धनिया पाउडर को भूनते हैं तो उसके पोषक तत्वो की वृद्धि होती है। इसमें बूरा के अलावा थोड़ी मिश्री, कसा नारियल व मेवे भी मिला सकते हैं।

माखन–मिश्री का मिश्रण देगा मुंह के छालों में आराम

जन्माष्टमी के दिन कान्हा को माखन मिश्री का भोग लगाया जाता है। सेहत के अनुसार यह काफी गुणकारी होता है। गाय, भैंस के दूध से बना मक्खन आँखों को स्वस्थ रखने के साथ हड्डियों को मजबूती देता है। इसमें मिश्री मिलाने से इसकी प्र.ति शीत हो जाती है, जिससे यह वात और पित्त रोगों का ठीक करता है। शिशुओं में मक्खन अंदरूनी ताकत बढ़ाता है। ये मुंह के छालों में लाभदायक है।

अनुभव अमृतम्

मैंने कहा– भाई आप सब लोग इनका ख्याल रखना। पीड़ी पीते हुए नहीं पाया जावे। पान मसाला, सिगरेट तो पीते नहीं थे। मिलती नहीं थी, बहुत महंगी थी। लोगों ने कहा– आपने काम बहुत अच्छा किया। सरपंच साहब खड़े हुए बोले– बाऊजी हमने भी इन लोगो को बहुत समझाया, लेकिन ये नहीं सुणे। लेकिन आज ये आपके सामने शपथ ले ली, तो ये अब झूठ नहीं बोलेगा।

आदिवासी ये कहता है कि यदि मान लेंगे तो उनको पूरा निभाऐंगे। हे! प्रभु, आज का दिन सफल हो गया। जीवन है जीने का नाम, चलते रहो दिन और शाम। इसलिये जीवन जीने का नाम हैं। आते हुए बस में, आलोक विद्यालय की बस डीजल हम भर देंगे साहब। डीजल भराना प्रारम्भ किया।

बड़ा उपकार आलोक जो जीवन से हार मानता, उसकी हो गयी छुट्टी। नाक चढ़ाकर कहे जिन्दगी, तेरी –मेरी हो गयी कुट्टी।। विद्यालय का और ड्राईवर साहब को भोजन कराया। नाई जाने के पूर्व कमलाजी तीन बजे से पूर्व उठ गयी थी। पास के वर्माजी आ गये उनकी मिसेज, नीचे से आर.एल. गुप्ता जी की धर्मपत्नी आदरणीय नर्बदाजी पधार गयी। भगवान की परम कृपा से तीन बजे से परांठे बनाने लगे।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 235 (कैलाश 'मानव')

दिव्यांग रजत को मातृभूमि में मिली राहत...छलकी मां की आंखें

कनाडा के ओनटेरियो राज्य के मारखन शहर की एक बीमा कम्पनी में कार्यरत मानक पटेल एंव उनकी पत्नी नीता कई जगह इलाज के बाद अपने युवा पुत्र रजत को लेकर नारायण सेवा संस्थान पहुंचे। रजत बचपन से ही ना सिर्फ मानसिक रूप से अक्षम अपितु दोनों पैरों से भी जन्मजात पोलियो ग्रस्त था। संस्थान में आर्थोपेडिक सर्जन द्वारा रजत का सफल ऑपरेशन हुआ।

रजत के माता–पिता ने संस्थान की निःशुल्क सेवा कार्यो व व्यवस्था आदि को विश्व में अनूठा बताते हुए कहा कि हम यहां से एक नया रजत लेकर जा रहे हैं। संस्थापक पूज्यश्री कैलाशजी मानव से भी आशीर्वाद ग्रहण किया।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग निधि

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर 4, उदयपुर 313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023